कोविड-19

आपदा या अवसर

Volume I

डॉ. विनय प्रताप सिंह

Kripa Drishti Publications, Pune.

कोविड-१९

आपदा या अवसर

संपादक

डॉ. विनय प्रताप सिंह

सहा. प्राध्यापक, (विभागाध्यक्ष–शिक्षा विभाग),
श्याम शिक्षा महाविद्यालय, सक्ती (छ.ग.).

Kripa-Drishti Publications, Pune.

पुस्तकाचे शीर्षक: **कोविड-१९ आपदा या अवसर**

संपादित: डॉ. विनय प्रताप सिंह

Volume I

Price: ₹500

ISBN: **978-81-974990-9-8**

9 788197 499098

Published: **Sept 2024**

Publisher:

Kripa-Drishti Publications

A/ 503, Poorva Height, SNO 148/1A/1/1A,
Sus Road, Pashan- 411021, Pune, Maharashtra, India.
Mob: +91-8007068686
Email: editor@kdpublications.in
Web: https://www.kdpublications.in

© **Copyright डॉ. विनय प्रताप सिंह**

All Rights Reserved. No part of this publication can be stored in any retrieval system or reproduced in any form or by any means without the prior written permission of the publisher. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages. [The responsibility for the facts stated, conclusions reached, etc., is entirely that of the author. The publisher is not responsible for them, whatsoever.]

संपादकीय

दो शब्द.....

तब कहॉ जानते थे हमारे पुरखे कि, वे बीमार क्यों पड़ते हैं? दिनभर कंद–मूल खोजना और आखेट करना। प्रकृति की गोद में ही पैदा होना और उसी में पलना–बढ़ना, पता लगता था तो बस भूख और भोजन का, बाकी सब कुछ अनजान और अजूबा था। उनकी छोटी–सी दुनिया में रात के गहन अंधकार में गुफा में सो जाते और सुबह चिड़ियों की चहचहाहट के साथ उठ जाते हैं।तब उन्हें उस दुनिया का तो पता ही नहीं था जिसे हम अपनी कोरी आंखों से देख ही नहीं सकते। वे तो केवल अपनी आंखों से दिखने वाले जीव जन्तु की दुनिया को ही जानते थे। हमारी नजरों से परे एक और अदृश्य दुनिया थी– सूक्ष्म जीवों की दुनिया। सदियों गुजर चुकी थी रहस्यमय अज्ञात बीमारियां निरन्तर लोगों की जान ले रही थी। छोटी मोटी बीमारियों के अलावा कभी कभी बड़ी जानलेवा बीमारियों का प्रकोप होता जिनके कारण देखते ही देखते दो चार नहीं, बल्कि सैंकड़ों हजारों लोगों की जान चली जाती। एसी स्थानीय या देश तक सीमित बीमारियों को महामारी कहा जाने लगा और देश की सीमाओं से बाहर दूसरे देशों तक पहुंचने वाली बीमारियां **वैश्विकमहामारियॉ** कहलायी।

इतिहास के आइने में महामारियॉ –

रोम साम्राज्य में सन् 165 ई. में जब निकट पूर्व के युद्ध लड़कर रोमन सेनाएं लौटी तो उनके साथ एक बीमारी भी चली आई। जल्दी ही रोम साम्राज्य में एक अज्ञात वैश्विक महामारी फैल गई। शोध कर्ताओं का अनुमान है कि वह बीमारी शायद चेचक रही होगी। तब वहॉ सम्राट मार्कश ऑरेलियश, एन्टोनियश आगस्टष का राज था। यह वैश्विक महामारी जिसका तब कोई इलाज ना था रोमन सेनाओं के साथ युनान से लेकर पूरे रोम साम्राज्य में फैल गई अनुमान है इससे करीब 50 लाख लोग मारे गए। जब यह महामारी चरम पर थी तो रह रोज करीब 2000 लोग इसके शिकार हो रहे थे। कहा जाता है कि सम्राट आगष्टक की मृत्यु भी इसी महामारी से हुई।

वैश्विक महामारियां समय समय पर कदम आगे बढ़ती रहीं। वैश्विक महामारी का एक भयानक आक्रमण सन् 541–42 में बाइजेनटाइन साम्राज्य के साथ–साथ सैसेनियन साम्राज्य पर भी हुआ। यह ''काली मौत'' यानि बुबोनिक प्लेग की महामारी थी जिसने बाइजेनटाइन साम्राज्य की राजधानी में जनजीवन को तबाह कर डाला। वहॉ एक–एक दिन में 5000 लोग मृत्यु का ग्रास बने। यह भूमध्यसागर के तट पर खड़े व्यापारिक जल पोतों में छिपे चुहों पर पल रहे पिश्यों से फैली थी।

इसके बाद एक बार फिर सन् 1346 से 1353 तक बुबोनिक प्लेग का भयंकर प्रकोप हुआ। इस महामारी ने युरोप, अफ्रीका और एशिया में मौत का भारी तांडव दिखाया। अनुमान है कि इसके कारण विश्व में 7.5 से लेकर 20 करोड़ तक लोगों के प्राण गए। यह वैश्विक महामारी एशिया में शुरू हुई और व्यापारिक जहाजों में छिपे चुहों के पिस्सुओं ने इसे तीनों महाद्विपों में फैला दिया।

सन् 1910–11 में एक बार फिर हैजे की वैश्विक महामारी का आक्रमण हुआ। इसे हैजे की वैश्विक महामारी का छठा दौर माना जाता है। यह भारत से शुरू हुआ और मध्य अफ्रीका, पूर्वी यूरोप से रूस तक पहुॅच गया। आज से ठीक सौ वर्ष पहले सन् 1918 से 1920 तक फैली फ्लू की वैश्विक महामारी ने दो करोड़ से पॉच करोड़ तक लोगों की जान ली थी। कहते हैं इससे विश्व की करीब एक–तिहाई आबादी पीड़ित हुई थी। फ्लू की इस महामारी की खासियत यह थी कि इससे स्वस्थ और युवा लोग बुरी तरह से पीड़ित हुए, जबकि इससे पहले तक फ्लू किशोरों, उम्रदराज लोगों या कमजोर लोगों तथा बीमार लोगों को अपना शिकार बनाता था। स्पूनिश फ्लू से महात्मा गांधी भी पीड़ित हुए थे।

इसी वैश्विक महामारी में हिंदी के महान कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने अपनी पत्नी को खो दिया था। निराला ने कहीं लिखा है कि तब गंगा में शव ही शव बहते हुए दिखाई देते थे क्योकि दाह–संस्कार के लिए ईंधन की कमी हो गई थी।

इन्फ्एंजा की इस वैश्विक महामारी के 51 वर्ष और सन् 1918–20 के भयानक 'स्पेनिश फ्लू' के बाद वर्ष 2019 के अंतिम माह में भयानक जानलेवा कोविड–19 फ्लू की वैश्विक महामारी का प्रकोप हो गया। यह महामारी कोरोना वायरस से फैली और चीन के वुहान शहर से शुरू हुई। इस वैश्विक महामारी के कारण विश्वभर में कई लाख लोग संक्रमित होकर काल के गाल में समा गए, जबकि लाखों लोगों की संख्या ने इस महामारी पर विजय हासिल की है। यह बीमारी चीन से नवंबर 2019 से शुरू हुई थी। कोरोना वायरस सार्स–सीओवी–2 से फैलने वाली बीमारी कोविड–19 शुरू हुई।

वर्तमान परिपेक्ष्य–

भारत में 22 मार्च 2020 को सुबह 7 सेरात 9 बजे तक भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने जनता कर्फ्यु का आहवान किया। जनता कर्फ्यू का उद्देश्य कोरोना संक्रमणमें तेजी की चैन को तोड़ना तथा कर्फ्यू के कारण जन जीवन में होने वाली बदलाव का अनुमान लगाना था या फिर कहे कि यह एक प्रकार की आने वाली कुछ दिनों में होने वाली लॉकडाउन के लिए लोगों को आगाह करना था। इसके पश्चात मोदी जी ने आने वाले दिनों में होने वाले लॉकडाउन के लिए आवश्यक सेवाओं से जुड़े लोगों या संस्थाओं जैसे पुलिस, चिकित्सा सेवाएं मीडिया, होम डिलिवरों पेशेवरों और अग्नि सामकों के छोड़कर प्रत्येक व्यक्ति को कर्फ्यू का पालन करना अनिवार्य था। इसी दिन शाम के पांच बजे नागरिकों को अपने दरवाजे बालकनियों या खिड़कियों पर खड़े होकर आवश्यक सेवाओं से जुड़े पेशेवरों के प्रोत्साहन के लिए ताली या घंटी बजाने को कहा गया था। राष्ट्रीय कैडेड कोर और राष्ट्रीय सेवा योजना से संबंधित लोगों को देश में कर्फ्यू लागू करना था।

सम्पूर्ण लॉकडाउन कई चरणों में हुआ प्रथम चरण 25 मार्च 2020 से 14 अप्रैल 2020 (कुल 21 दिन) के लिए किया गया था। इस दौरान लोगों को अपने घरों से बाहर निकलना निषेध किया गया। सभी परिवहन सेवाएं सड़क वायु और रेल निलंबित किया गया। हालांकि आग पुलिस जरूरी सामान और आपातकालीन सेवाओं का उपयोग किया जा सकेगा।

खाद्य दुकान बैक और ए.टी.एम पेट्रोल पंप अन्य आवश्यक वस्तुएं और विनिर्माण जैसी सेवाओं के छूट दी गई है। शैक्षक संस्थानों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों और आतिथ्य सेवाओं को निलंबित कर दिया गया। गृह मंत्रालय ने कहा कि जो व्यक्ति लॉकडाउन का पालन नहीं करेंगे उन्हें

एक साल तक जेल भी की जा सकती है। इस दौरान संपूर्ण शैक्षिक संस्थाओं को बंद रखा गया और पूरा जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया। शासकीय एवं अशासकीय संस्थानों में कार्यरत शिक्षक कर्मचारी बच्चे, मजदूर सभी इस लॉकडाउन से प्रभावित हुए।

इसी क्रम में द्वितीय चरण का लॉकडाउन 15 अप्रैल 2020 से 3 मई 2020 (कुल 19 दिन) का हुआ। इस लॉकडाउन के दौरान लोंगों की आजीविका पर प्रश्नचिन्ह लग गया। कई मजदूर एवं कुशलकर्मी जो कि अपने निवास स्थान से दूर अन्य राज्यों देशों मे बसे थे वे दाने–दाने के लिए मोहताज हो गए । चूँकि परिवहन का कोई वैकल्पिक साधन नहीं था इसलिए जनजीवन अपने घरों के लिए पैदल ही निकल पड़े । इस बीच कई बेगुनाह भुख प्यास थकान चिन्ता के कारण मारे गए तथा जो बच गए उनके लिए आने वाली चुनौंतियां दुभर हो गईं।

इसी क्रम में तृतीय चरण का लॉकडाउन 4 मई 2020 से 17 मई 2020 (14 दिन) चतुर्थ चरण 18 मई 2020 से 31 मई 2020 (14 दिन) एवं पंचम चरण 1 जून 2020 से 30 जून 2020 (30 दिन) का हुआ।

इस विश्वव्यापी महामारी कोरोना के कारण सम्पूर्ण मानव जीवन पूर्ण रूप से प्रभावित हुआ। देश–विदेशों में पढ़ने एवं काम करने गए लोग वहीं फंस गए क्योकि लॉकडाउन के समय सरकार ने अन्तर्राष्ट्रीय परिवहन सेवाओं को पूर्ण रूप से बन्द कर दिया।

कोविड़–19 आपदा या अवसर

डॉ. विनय प्रताप सिंह
सहा. प्राध्यापक (विभागाध्यक्ष–शिक्षा विभाग)
श्याम शिक्षा महाविद्यालय, सक्ती (छ.ग.)
ईमेलः–cgeducation2020@gmail.com

अनुक्रमणिका

1. कोविड–19 आपदा या अवसर–*डॉ. विनय प्रताप सिंह* **..... 1**

2. कोविड–19 का दवा उत्पादक क्षेत्रों पर प्रभाव–*श्री संजय कुमार साहू*..... 8

3. कोविड–19 का राजनीति पर प्रभाव और नए आयाम–*श्रीमति मेनका चन्द्राकर* **..... 16**

4. कोविड–19 का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव–*डॉ. धरणी राय*..... 23

5. कोविड–19 का विद्यार्थियों पर प्रभाव और नवीन ज्ञान का अवसर–*शत्रुघन पटेल* **..... 34**

6. कॉविड–19 का शिक्षा पर प्रभाव और नवीन आयाम–*डॉ. अमृता तिवारी*..... 39

7. कोविड–19 का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव–*डॉ. कल्पना सिंह*..... 50

8. कोविड–19 का शिक्षकों पर प्रभाव एवं नवाचार–*माधुरी वर्मा* **..... 61**

9. कोविड–19 का सामाजिक एवं आर्थिक विकास पर प्रभाव–*अमित कुमार* **..... 70**

10. कोविड–19 का ग्रामीण क्षेत्रों पर प्रभाव और नवीन अवसर–*डॉ. अमित पटेल* **..... 77**

11. कोविड–19 का शिक्षण विधियों पर प्रभाव–*डॉ. हेमा तिवारी* **..... 85**

12. कोविड–19 का छात्रों के अध्ययन आदतों पर प्रभाव–*डॉ. तेजराम नायक* **..... 97**

13. कोविड़ -19 का समाजिक एवं आर्थिक विकास पर प्रभाव-*आर. अबिषेकइजराइल* **... 105**

14. Resilience and Transformation: Analyzing the Impact of COVID-19 on the Indian Economy - *Dr. Vipul Bhatt, Vibha Pundir* **..... 120**

15. Impact of Covid on Indian Economy - *Dr. Vimmi Behal* **..... 125**

ABOUT THE EDITOR

डॉ. विनय प्रताप सिंह वर्तमान समय में विभागाध्यक्ष (शिक्षा संकाय) श्याम शिक्षा महाविद्यालय, सक्ती (छत्तीसगढ़) में कार्यरत् है। इस पुस्तक के पूर्व अपने दो पुस्तको HUMAN GROWTH AND DEVLOPMENT व RESEARCH METGODOLOGY, CONCEPT AND CASES प्रकाशित की है। आपने कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर से पीएचडी की उपाधि पूर्ण की है। आपने रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, (छत्तीसगढ़) से बी.एड., एम.एड. व एम.ए. (मनोविज्ञान) का अध्ययन किया है तथा दीनदयाल विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उत्तर–प्रदेश) से एम.ए. (हिन्दी) एवं बी.ए. की डिग्री पूर्ण की है। आप 1 वर्ष श्री रावतपुरा इस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, पचेड़ा नया रायपुर, 2 वर्ष श्रीराम कालेज, सारागॉव रायपुर तथा 9 वर्षो से श्याम शिक्षा महाविद्यालय, सक्ती (छत्तीसगढ़) में कार्यरत् है। आपको सन् 2021 में ग्लोबल थ्रम्फ फाउण्डेशन की ओर से ''ग्रामीण शिक्षा में उत्कृष्ट योगदान'' के लिए अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया और सन् 2022 में रिसर्च एजुकेशन शाल्यूशन की ओर से ''श्रेष्ठ विभागाध्यक्ष'' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपके द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में कुल 16 शोध–पत्र प्रकाशित किया जा चुका है। इसके अलावा आपकी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 90 सेमीनार, 10 कार्यशाला, 05 फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम, 95 बेबीनार, 10 सम्मेलनो में शोध–पत्र प्रस्तुतीकरण एवं सक्रिय सहभागिता रही है। शिक्षा के विकास व शोध–कार्यो में आपकी सक्रिय सहभागिता रही है। कोविड़–19 के दौरान आपने शिक्षा के साथ–साथ विभिन्न क्षेत्रों के बदलते परिदृश्य व उतर–चढ़ाव का अध्ययन किया जिसके परिणामस्वरूप आपने कॉविड़–19 आपदा या अवसर विषय–वस्तु पर पुस्तक लेखन प्रारम्भ किया जो सभी पाठको के लिए उपलब्ध है। आशा करते है कि यह पुस्तक आपके लिए उपयोगी व कारगर साबित होगी।

Price: ₹500

KRIPA DRISHTI PUBLICATIONS

Kripa-Drishti Publications
A-503 Poorva Heights, Pashan-Sus Road, Near Sai Chowk,
Pune – 411021, Maharashtra, India.
Mob: +91 8007068686
Email: editor@kdpublications.in
Web: https://www.kdpublications.in

ISBN: 978-81-974990-9-8

9 788197 499098